

आज की मुरली सार ---

बाबा ने कहा, एक ईश्वरीय मत पर चलने से ही, तुम्हें बाप से हेल्थ, वैल्थ, हैपीनेस का वर्सा मिल जायेगा.

क्या हैं ये ईश्वरीय मत? कुछ मुख्य बातें जो अब तक मुझे समझ में आती हैं.

1. बाबा हमें सबसे पहली मत देते हैं, बच्चे खुद को आत्मा समझ मुंज एक बाप को याद करो, तो तुम्हारे **63** जन्मों के विकर्म, जो विकारों के रूप में आत्मा में हैं वह भस्म हो जायेंगे और आत्मा संपूर्ण पावन बन जायेंगी.

2. संपूर्ण पवित्र ब्राह्मण जीवन. इसलिए बाबा हमें युक्ति बताते हैं एक-दूसरे के प्रति आत्मा भाई-भाई की वृत्ति रख, दृष्टि से एक-दूसरे को ब्रुकुटि में आत्मा भाई को ही देखो.

3. मन को मजबूत बनाने के लिए, स्वदर्शन चक्रधारी बनो. बाबा हमें ये ड्रिल इसलिए सिखाते हैं, जिसे हमें स्वचिंतन करने की प्रैक्टिस हो तो हमारी स्थिति अन्तरमुखि बन जायेगी.

अन्तरमुखि स्थिति बहुत मजबूत स्थिति है, जिसे हम माया के कोई भी वार से सहज ही बच सकते हैं.

4. साधन, सम्पत्ति और सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्यता. इस पूरुषोत्तम संगमयुग पर मेरा मन अगर माया के वश हो कर साधन, सम्पत्ति और सम्बन्ध में भटक गया तो ईश्वरीय प्राप्तिओं से हम वंचित रह जायेंगे. इसलिए बाबा हमें साधन, सम्पत्ति और सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्य दिलाते हैं और सच्चाई, सादगी और स्वच्छता को हमारे जीवन में धारण करवाते हैं.

5. कर्मयोगी जीवन. ब्राह्मण जीवन में माया से बचने के लिए, बाबा हमें याद की यात्रा में रहने का सिखलाते हैं. हर कर्म करते बुद्धि का योग एक बाप से रहे इसे ही कर्मयोगी जीवन कहा जाता है.

6. दैविगुण धारण करना है. बाबा ने कहा है, किसी भी आत्मा को मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देना है.

7. ईश्वरीय नियमबद्ध जीवन. सुबह अमृतवेला, मुरली क्लास, खाने-पीने की धारणा, कम बोलो - मीठा बोलो - धिरे बोलो. साम का योग और चार्ट.

8. खुद को निमित्त समझ कर, विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा करना और दृष्टि हो कर संसार का कारोबार चलाना.

ॐ शान्ति.